Prof Khushbu kumari
Guest Teacher
Dept of Political science
V.S.J. College, Rajnagar, Madhubani, lnmu

Class - B.A-3(H)
Paper - VI

Topic - अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के अध्ययन के उपागम (मॉर्टन कॉप्लान)

Lecture-3

(4) सार्वभौम व्यवस्था — चौथा मॉडल सार्वभौम व्यवस्था मॉडल है जिसमें सभी राष्ट्र एक संघात्मक प्रणाली में संगठित हो जाते हैं। एक सार्वभौम कर्त्ता (अन्तर्राष्ट्रीय संगठन) द्वारा सारा विश्व एक संघात्मक विश्व राज्य में बदल जाता है जो परस्पर सहनशीलता तथा सार्वभौम कानून तथा उसकी कार्य-प्रणाली पर आधारित हो जाता है। सार्वभौम कार्यकर्ता इतना शक्तिशाली होता है कि वह युद्ध रोक सकता है तथा शान्ति और सन्तुलन बनाये रख सकता है।

(5) पद-सोपानीय अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था — ऐसा मॉडल तभी अस्तित्व में आ सकता है जब एक बड़ी महाशक्ति विजय अथवा शान्ति द्वारा सभी राष्ट्रों को अपने नियंत्रण में कर ले। राज्य प्रादेशिक इकाइयों में परिवर्तित होकर क्रियात्मक इकाइयों में बदल जाते हैं। महाशक्ति सार्वभौम होकर सभी दूसरे राज्यों को अपने में समा लेती है और केवल एक राष्ट्र बाहर रह जाता है। यह श्रेणीबद्ध व्यवस्था निर्देशात्मक भी हो सकती है और गैर-निर्देशात्मक भी।

यदि यह किसी निकृष्ट राज्य जैसे किसी राष्ट्रीय कर्ता द्वारा की गयी विश्व विजय का परिणाम है तो निदेशात्मक होगी और यदि यह प्रजातांत्रिक देशों में प्रचलित नियमों पर आधारित हो तो गैर-निदेशात्मक।

(6) इकाई निषेधाधिकार व्यवस्था — यह काप्लान द्वारा दिया हुआ छठा मॉडल है। इसमें बहु-ध्रुवीय घटना भी सम्मिलित रहती है जिसमें सभी राज्य अत्यन्त शक्तिशाली होते हैं। प्रत्येक राष्ट्र के पास ऐसे शस्त्र होते हैं जिनसे वह दूसरों को नष्ट कर सके। इसी अवस्था में प्रत्येक राज्य के पास निषेधाधिकार होगा अर्थात उसके निर्णय एक प्रकार से निर्णायक होंगे। यह व्यवस्था तभी सफल होगी जबकि शान्ति भंग करने वाले राष्ट्र के विरोध में अन्य सभी राष्ट्र सामूहिक रूप से खड़े हो जायें। यह इकाई निषेधाधिकार व्यवस्था शेष पाँच मॉडलों में किसी से भी विकसित हो सकती है। इससे विश्व की राजनीतिक स्थिति में परिवर्तन आ जाएगा।

आलोचना :—

(1) काप्लान के मॉडल सीमित हैं — काप्लान के ये मॉडल अपने आप में सीमित हैं। शान्ति संतुलन व्यवस्था 1945 के बाद अव्यावहारिक हो गयी है। उसकी यह भविष्यवाणी गलत

सिद्ध हो गई कि शक्ति-सन्तुलन पहले शिथिल द्वि-ध्रुवीय व्यवस्था और फिर कठोर द्वि-ध्रुवीय व्यवस्था में बदलता है। 1945 के बाद के अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों का विकास इस बात का प्रतीक है कि जो उसने कहा था, उसके विपरीत सच हुआ।

(2) काप्लान के चार परिकाल्पनिक मॉडलों की अव्यावहारिकता — काप्लान द्वारा प्रस्तुत चार पूर्व-काल्पनिक प्रतिमान पूर्णतया अव्यावहारिक प्रतीत होते हैं। इट द्वि-ध्रुवीय प्रतिमान अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में स्थापित नहीं हो सकेगा। एक राष्ट्र द्वारा सारे विश्व पर शासन करना भी सम्भव नहीं है। पद-सोपानीय व्यवस्था भी सम्भव नहीं है।

(3) काप्लान ने भू-राजनीतिक तत्वों की उपेक्षा की है।

Khushbu Kumari
16th sept. 2020